

विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। -प्रेमचंद

व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये वनानुभव

प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक पुनर्वसु आत्रेय को चिकित्सा व स्वास्थ्य-रक्षण के एक ऐसे सिद्धांत का जनक माना जाता है जिसे आज वनानुभव और प्रकृति-अनुभव (फॉरेस्ट - एक्सपीरियंस, नेचर-एक्सपीरियंस) आदि नामों से जाना जाता है। स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार में प्राकृतिक स्थलों की भूमिका का आयुर्वेद में कम से कम 1000 साल ईसा पूर्व से वर्णन प्राप्त होता है। हाल ही में हुई शोध अब यह निर्विवाद सिद्ध करती है कि प्रकृति का सानिध्य हमारे संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और बायो फिजियोलॉजिकल स्वास्थ्य में सुधार करता है। परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि वर्ष 2022 तक की शोध अब यह निर्विवाद सिद्ध कर चुकी है कि वनानुभव से ह्यूमन नेचुरल किलर सेल्स की क्रियात्मकता बढ़ने और इन्फ्लेमेशन कम होने सहित अनेक रास्तों के माध्यम से इम्यूनिटी बढ़ती है।

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया: भगवन्! देखते हैं कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है।

आत्रेय का उत्तर था: अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के तमाम कारण, जैसे ऋतुओं का विपरित होना, प्रज्ञापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतियोग, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वालों में पथ्य, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार तुरन्त हानि नहीं पहुंचा पाता। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थाणि भवन्ति। च.सू.28.7)। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या व्यथा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वही दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुंचा हुआ, शरीर के प्राणायतनों में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कठदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर की बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्षणों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियाँ भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मजबूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सहज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुस्त मांसपेशियों, संरचना, स्वरूप व मजबूत इन्द्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूख, प्यास, ठंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सम अग्नि वाला, बुढ़ापी की उम्र में ही बूढ़ा होने वाला, मांसपेशियों के सही चयन वाला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.18)। समर्थासंप्रमाणस्तु समसंहननो नरः। दुर्बेन्द्रियो विकाराणां न बलेनाभिपृथते। क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः। समपक्ता समजरः सममांसचयो मतः॥

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्यूनिटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र संक्रमण, बीमारी या अन्य अवांछित तत्वों के आक्रमण से बचने के लिये शरीर को सुरक्षा प्रदान करता है। व्याधिक्षमत्व में कमी होने से शरीर इम्यूनों-कॉम्प्रोमाइज्ड स्थिति में आ जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर को रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोगजनन आसानी से होता है। इम्यूनिटी किसी व्यक्ति के शरीर में विशिष्ट एंटीबॉडी या स्वेतकरत कौशिकाओं की क्रिया से किसी विशेष संक्रमण, विषाक्त पदार्थ या हानिकारी जीव-शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनिटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है: इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनिटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कौशिकाओं जैसे न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनिटी को क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कौशिकाओं, बी-कौशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देता है। यह तंत्र इम्यून-मेमोरी के लिये भी उत्तरदायी है जो मानव में पहले हुई कुछ बीमारियों को पहचानता है और दुबारा नहीं होने देता। मेमोरी बी-सेल नामक कौशिकायें पैथोजेन को पहचानती हैं, और दुबारा संक्रमण होने पर त्वरित-प्रतिक्रिया करते हुये संक्रमण को निष्फल करने का काम करती हैं। हालांकि नवीन शोध यह बताती है नेचुरल-किलर कौशिकायें भी एडाप्टिव-इम्यूनिटी प्रतिक्रिया का प्रदर्शन कर सकती हैं। जो भी हो, गडबड तब होती है जब कुछ वायरस या माइक्रोब्स अपने पूर्व रूप से म्यूटेट या उत्परिवर्तित होकर इम्यून-मेमोरी (प्रतिरक्षा स्मृति) को गप्पा दे देते हैं।

व्याधिक्षमत्व को परिभाषित करते हुये चरकसंहिता के दिग्गज टीकाकार आचार्य चक्रपाणि ने लगभग 900 साल पहले लिखा (च.सू. 28.7 पर चक्रपाणि): व्याधिक्षमत्वं व्याधिबलविरोधित्वं व्याध्यात्प्रादप्रतिबन्धकत्वमिति यावत्। तात्पर्य यह है कि व्याधिबल की विरोधिता व व्याधि की उत्पत्ति में प्रतिबंधक होना व्याधिक्षमत्व है। अभिप्राय यह है कि शरीर में उत्पन्न बीमारी के बल या तीक्ष्णता को रोकने और बीमारी की उत्पत्ति को रोकने वाली क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है।

व्याधिक्षमत्व को बल, ओज और प्राकृत श्लेष्मा के रूप में भी जाना जाता है। बल वह शक्ति है जिसके द्वारा शरीर विभिन्न चेष्टाओं से कार्य संपन्न करता है। इस कार्योत्पादक शक्ति को व्यायाम-शक्ति से जाना देखा जाता है। बल के तीन प्रकार हैं (च.सू.11.36): त्रिविधं बलमिति- सहजं, कालजं, युक्तिकृतं का सहजं यच्छरीरसत्त्वयोः प्राकृतं, कालकृतमुत्पिपाणयं वयःकृतं च, युक्तिकृतं पुनस्तद्व्याध्यादचेष्टायोगजम्। बल तीन प्रकार के होते हैं। सहज बल शरीर और मन पर आभासित होता है। उम्र के साथ शरीर की वृद्धि से प्राप्त बल को कालज बल कहा जाता है। खान-पान, जीवन-शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है। व्याधिक्षमत्व को ओज और ओज को बल के रूप में भी समझा जाता है (सु.सू.15.19)। रसादीनं शुक्रान्तानां धातूनां यत् परं तेजस्तत् खल्वोजसदेव बलमियुच्यते त्वशास्त्रसिद्धान्तात्। रसादिक तथा शुक्रान्त धातुओं के उच्चतर सार भाग को ओज कहते हैं तथा आयुर्वेद के अनुसार उसी का दूसरा नाम बल है। यही बल व्याधियों से शरीर को रक्षा करता है। वहीं एक बल समझना आवश्यक है ओज और बल हालांकि एक कहे गये हैं किन्तु ओज का कारण और बल को कार्य माना जाता है। ओज का रूप, रस और वर्ण होने से द्रव्य है जबकि बल इसका कार्य है। यहाँ व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में बल (कार्य) और कारण (ओज) को एक मान लिया जाता है। इसी सन्दर्भ में प्राकृत कफ को बल या व्याधिक्षमत्व का कारण माना जाता है (च.सू.17.1.17): प्राकृतस्तु बलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते। स चैवैजः स्मृतः काये स च पाप्मोपदिश्यते। यही कारण है कि कफज प्रकृति में उत्तम बल, पित्तज प्रकृति के व्यक्तियों में मध्यम बल तथा वातज प्रकृति के व्यक्तियों में अवर बल होता है।

इस प्रकार व्याधिक्षमत्व का तात्पर्य व्याधि-बल का विरोध शरीरगत बल द्वारा किया जाता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न भावों को दशविध रोगी परीक्षा के भावों में भी देखा जाता है। उदाहरण के लिये व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सप्त प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गयी है, बल का मुख्य कारक ओज है जो सभी धातुओं का सार है। साररूप में यह सभी धातुओं में व्याप्त होकर धातुओं को रक्षा करता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले अन्य भावों में साध्य, सत्व, अग्नि, शारीरिक-शक्ति व वय है। अग्निबल को आहार करने की क्षमता से परखा जा सकता है। आहार-शक्ति (आहार को मात्रा) अग्निबल पर आश्रित है। यदि व्यक्ति की आहार शक्ति मजबूत है तो भोजन का पाचन और धातुओं की पुष्टि यथोचित होने से शरीर मजबूत रहता है। व्यायाम-शक्ति या शारीरिक रूप से श्रम करने की शक्ति भी बल का संकेतक है। व्यक्ति की वय या उम्र का भी बल से संबंध होता है। युवावस्था में उत्तम बल और जरा या बुढ़ापा आने पर बल कम रहता है।

व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये बल व ओज की वृद्धि में सहायक द्रव्यों और क्रियाओं का इस प्रकार युक्तिकृत नियमित सेवन करना चाहिये, जिससे व्याधिक्षमत्व का संरक्षण व वृद्धि हो किन्तु प्रकृति, अग्नि, धातुओं व मलक्रिया का समत्व तथा आत्मा, इन्द्रियों व मन की प्रसन्नता यथावत बनी रहे। संक्षेप में व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये सात रक्षा-दीवारों की निरंतर और सम्यक सार-सम्हाल करना आवश्यक है। इनमें आहार या खानपान, विहार या जीवनशैली, स्वस्थवृत्त या व्यक्तिगत स्वास्थ्य विषयक क्रियायें, सद्भक्त या व्यक्तिगत सदाचरण, पंचकर्म या शारीरिक विधाकता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें, रसायन या उग्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय, और अंततः ओषधि या चिकित्सा शामिल है। परन्तु वनानुभव इन सबसे ऊपर है। एक साथ वनवास काटने की बात नहीं है बल्कि प्रतिदिन थोड़ा वनानुभव अवश्य लीजिये। प्रति सप्ताह कम से कम 168 मिनट वनों, उपवनों और हरियाली में बिताइये। इससे इम्यूनिटी बढ़ने के साथ प्रसन्नता, आत्म-सम्मान, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में धनात्मक सुधार होगा। यहशास्त्र-सिद्ध, शोध-सिद्ध और स्वानुभूत है।

-अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

आठ करोड़ रुपए की लागत से बनी सड़क पर गहरे गड्ढे होने लगे

विधायक द्वारा एक माह पहले ही विकास कार्यों का लोकार्पण किया गया था

देवली, (निर्स)। लोकार्पण को एक महीना भी हुआ नहीं कि आठ करोड़ रुपए की लागत से बनाए गए रोड पर अभी से ही गहरे गड्ढे होना शुरू हो गए हैं। उल्लेखनीय है कि एक माह पहले क्षेत्रीय विधायक हरीश चंद्र मीणा के द्वारा नगर पालिका की ओर से बनाए गए विकास कार्यों का लोकार्पण किया गया था। विधायक द्वारा एक माह पहले लोकार्पण किए गए करोड़ों की

■ 'पांच साल की गारंटी की योजना पर रोड का निर्माण कराया गया है। रोड पर कहां गहरे गड्ढे हुए इसकी जांच करवा लेते हैं'

लागत से बनाए गए डामरीकरण और सीसी रोड की मामूली सी गारंटी ही दुर्दशा होना शुरू हो गई है।

गौरतलब है कि नगर पालिका ने लगभग साढ़े 16 करोड़ रुपए की लागत से ढाई-ढाई किलोमीटर के दो रोड का पूर्ण निर्माण करवाया और करवाया जा रहा है। इसमें से देवली से जयपुर की ओर जाने वाले रोड का

निर्माण कार्य पूरा हो गया जिसे नगर पालिका द्वारा लोकार्पण करवा दिया गया है। उक्त रोड निर्माण में शुरू से ही भ्रष्टाचार की परत दर परत चढ़ती जा रही थी जिसे पालिका देख कर भी नजर अंदाज करती रही। रोड निर्माण में भ्रष्टाचार होने के चलते जयपुर टॉक भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के आला अधिकारियों ने यहां उक्त रोड निर्माण की जांच की और तो पीडब्ल्यूडी सहायक अभियंता के सहयोग से रोड निर्माण कार्य में इस्तेमाल किए गए मैटेरियल के सैंपल भी जांच किए जाने के लिए रोड से एकत्रित किए और पीडब्ल्यूडी टॉक के माध्यम से जांच हेतु क्वालिटी कंट्रोल विभाग को भेज दिए गए थे।

दो माह पहले उक्त रोड निर्माण कार्य में हो चुके भ्रष्टाचार की रिपोर्ट में मामला क्या रहा, जांच एजेंसी ने अब तक उक्त मामले की पारदर्शिता नहीं दिखाई है। यहां देखने वाली बात तो यह है कि उक्त रोड निर्माण कार्य में हुए भ्रष्टाचार को छुपाने के लिए टेकेदार द्वारा सीसी रोड पर उखड़ चुकी गिट्टीओं पर केमिकल डाला जा रहा है। परंतु भ्रष्टाचार की भेंट चढ़े रोड निर्माण कार्य ने टेकेदार और अधिकारियों के बीच



देवली से जयपुर की ओर जाने वाली सड़क कई जगह से क्षतिग्रस्त हो गई है।

हुई सांठगांठ की पोल खोल कर रख दी है। जिसकी जानकारी भ्रष्टाचार ब्यूरो निरोधक विभाग को बखूबी प्राप्त है इसलिए कि दो माह पहले भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के आला अधिकारी उक्त रोड निर्माण में हुई धांधली जांच करने पहुंचे थे। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार लगभग 8 करोड़ रुपए की लागत से बनाए गए उक्त रोड निर्माण पर पालिका प्रशासन ने टेकेदार को अब तक सात से साढ़े सात करोड़ रुपए तक का भुगतान कर दिया है। सुरेश कुमार मीणा, अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका देवली का

कहना है कि पांच साल की गारंटी की योजना पर रोड का निर्माण कराया गया है। रोड पर कहां गहरे गड्ढे हुए इसकी जांच करवा लेते हैं। अगर ऐसा मामला है तो टेकेदार का 5000000 रुपए का भुगतान अभी बाकी है। जिसे रोक दिया जाएगा।

पौधारोपण से भी जरूरी पौधों की सुरक्षा है : नगर परिषद आयुक्त

भीलवाड़ा, (निर्स)। शहर को हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से संगम उद्योग समूह द्वारा सोनी हॉस्पिटल में चलाये जा रहे एक लाख पौधे व पांच हजार ट्री गाड़ वितरण अभियान के तीसरे दिन

■ पौधा वितरण अभियान में उमड़ी लोगों की भीड़

अतिथि के रूप में नगर परिषद आयुक्त हेमाराव चौधरी ने अभियान की सराहना करते हुए उपस्थित आमजन को संबोधित करते हुए कहा कि संगम समूह से निशुल्क पौधे प्राप्त कर पौधारोपण के पश्चात उनकी नियमित रूप से देखभाल करें, क्योंकि पौधारोपण से भी जरूरी पौधों की सुरक्षा है।

पौधा वितरण प्रथमी कबूलाल जाजू ने बताया कि अभियान के प्रथम चरण का समापन 21 जुलाई को होगा। उन्होंने आमजन से प्रतिदिन प्रातः आठ से 10 तक अशोक, चंपा, मोगरा, तुलसी, मीठा नीम, अमरूद, अनार,



भीलवाड़ा शहर को हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से पौधों का वितरण किया गया।

करंज, नीम, कनेर, गुड़हल, चांदनी, बिल्वपत्र, गुलमोहर, बरगद सहित 35 प्रजातियों के पौधे निशुल्क प्राप्त करने की अपील की।

समूह के चेयरमैन रामपाल सोनी

ने बताया कि आज 7250 पौधों का वितरण प्रभात जैन, महेश मोदानी, सत्यनारायण बिरला, भैरुसिंह, नंदू, राधा कुम्हार, बबली, रेखा कुम्हार सहित सैकड़ों लोगों को किया गया।

समूह के प्रबंध निदेशक अनुराग सोनी ने बताया कि टी गाड़ हेतु रतनलाल सामरिया एवं हिम्मत पारीक से आवेदन पत्र प्राप्त कर टी गाड़ ले सकते हैं।

गंगोत्री से 750 किमी पैदल सफर तय कर किशनगढ़ बास पहुंचे कावड़ियों का सम्मान

किशनगढ़ बास, (निर्स)। गंगोत्री से जल भरकर 20 दिन में 750 किलोमीटर का पैदल सफर तय कर किशनगढ़ बास के प्राचीन पुराना बाजार स्थित मोटेस्वर महादेव पर जल चढ़ाने पहुंचे शिवभक्त कांवाड़ियों हरिओम गुप्ता, पीयूष शर्मा व पवन उर्फ विक्की सोनी का पूर्व विधायक रामहेत यादव सहित शहर के गणमान्य लोगों की ओर से दुपट्टा व माला पहनाकर सम्मान किया गया। वहीं पंडित नरेश शर्मा ने विधि विधान व मंत्रोच्चार के साथ पूजा अर्चना करारक जल अभिषेक कराया एवं श्रद्धालुओं में खीर का प्रसाद वितरण किया गया। 1998 से निरंतर गंगोत्री गोमुख

हरिद्वार से सावन मास के माह में कावड़ लेकर आ रहे हरिओम गुप्ता हरिद्वार 7 गोमुख से 4 और गंगोत्री से 13 बार जल लाकर शहर के विभिन्न मंदिरों में जल अभिषेक कर चुके हैं। गुप्ता ने बताया 750 किलोमीटर की 20 दिन में पैदल यात्रा कर गंगोत्री से जल लेकर पहुंचे हरिओम गुप्ता ने बताया कि 17 जून को पीयूष पुत्र अशोक शर्मा, पवन उर्फ विक्की पुत्र स्व. सुधाश सोनी, रवि शर्मा, ललित राणा 5 सदस्यों का जत्था गंगोत्री के लिए रवाना हुआ। 24 जून को गंगोत्री से जल लेकर जत्था गंगोत्री से अरावली पर्वतमाला की चढ़ाई चढ़ते हुए हरिद्वार दिल्ली होते हुए 14 जुलाई को



किशनगढ़ बास में गंगोत्री से पैदल जल लेकर आए कावड़ियों का पूर्व विधायक रामहेत यादव ने सम्मान किया।

किशनगढ़ बास शिव कावड़ संघ के कैंप पहुंचने पर शिव कावड़ संघ

समिति की ओर से स्वागत किया गया। इस मौके पर व्यापार महासंघ अध्यक्ष परमानंद लखायणी भाजपा युवा नेता विश्रवास यादव पार्षद मनोज मिश्र शिव हरि गुर्जर किराना अध्यक्ष मदन अग्रवाल पत्रकार मुकेश सोनी लघु उद्योग संघ अध्यक्ष हरवेश खुराना विनय गोयल मनीष पंजाबी जनेश भूटानी सतीश शर्मा हौर हरवानी अशोक शर्मा राधा रानी मंदिर पुजारी यादराम शर्मा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इसके अलावा किला ऊपर रेणी मोहल्ला, जोहड़ समीप सहित अनेक मंदिरों के शिवालयों पर कावड़ियों ने पहुंचकर जल चढ़ाया।

राशिफल रविवार 16 जुलाई, 2023



पंडित अनिल शर्मा

प्रथम सावन मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2080, आर्द्र नक्षत्र रात्रि 2:34 तक, ध्रुव योग प्रातः 8:32 तक, विष्टि करण प्रातः 9:21 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरु-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा प्रातः 9:21 तक रहेगी। आज सावन संक्रांति है। सूर्य कर्क राशि में सोमवार प्रातः 5:07 पर प्रवेश करेगा। पुण्य काल रविवार को रहेगा। सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:23 से 9:10 तक, लाभ-अमृत 9:10 से 12:33 तक, शुभ 2:14 से 3:56 तक। राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 7:19

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशंकाएं प्राप्त होंगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा कर सकते हैं।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं और समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य विगड़ सकते हैं। अतिथियों का आगमन अत्यंत अस्त-व्यस्त हो सकता है।

मकर
परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानों का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संपादित स्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कुंभ
नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिजनों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मीन
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।